# लहराता प्रकृति का आंचल

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

प्रकृति पंचभूतात्मक है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इसके तत्त्व है। चौरासी लाख जीव यौनियों की उत्पत्ति स्थान प्रकृति है। चार गतियों के लोग इसमें रहते हैं। नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति ओर देव गति। इन चार गतियों के लोग रहते हैं। सबसे निकृष्ट कर्म करने वाले जीव नरक गति में जाते हैं। सबसे अच्छा कर्म करने वाले जीव देव गति को प्राप्त करते हैं। जो जैसा कर्म करता है उस कर्म का फल प्राप्त करने के लिए वह भिन्न–भिन्न जीव यौनियों में जन्म ग्रहण करता है। प्रकृति के लहराते अंचल में सभी जन्म लेते हैं और इसी में विलीन हो जाते हैं। मृत्यु के पश्चात् पंचतत्वों का बना शरीर पंचतत्वों में मिल जाता है। परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। परिवर्तन शाश्वत नियम है। भारत प्रकृति की क्रीड़ास्थली है। यहां प्रकृति का सुनहरा अंचल सभी ऋतुओं और सभी मौसमों में हरा–भरा रहता है। इस लहराती प्रकृति को कवियों ने अपने शब्दों में वर्णन किया है। पशु–पक्षी, कीट–पतंगे, शेर–बाघ, हाथी–चिता आदि जीव प्राकृतिक जीव हैं। सभी प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं। भारत में अनेक ऐसे प्राकृतिक स्थल हैं जिनको देखने के लिए शैलनी प्रतिवर्ष दूर देशों से आते हैं और लहराती प्रकृति का आनन्द लेते है। प्रकृति का पालन करने वाला व्यक्ति भी सदैव प्रसन्न रहता है। जो व्यक्ति प्रकृति के जितना सन्निकट रहता है वह उतना स्वस्थ रहता है। प्रकृति स्वयं नियंत्रण करती है। जिस तत्व की कमी रहती है प्रकृति स्वयं प्रदान करके स्वस्थ बना देती है। इसीलिए प्रकृति के प्रांगण में रहने वाला कभी अस्वस्थ नहीं रहता। इसका कारण यह है कि प्रकृति पांचों तत्वों का संतुलन बनाये रखती है। आयुर्वेदाचार्य चरक ने प्रकृति के स्वरूप को पहचाना। इसीलिए उन्हें प्राकृति चिकित्सा का जनक कहा जाता है। आज भी प्राकृति औषधियों का सेवन करके लोग स्वस्थ हो रहे हैं। सब कुछ मिल सकता है किन्तु शुद्ध आक्सीजन केवल प्रकृति से मिलता है। शहरों और नगरों में वाहन के द्वारा छोड़ा गया जहरीला धुंआ प्रकृति को विकृत कर रहा है जिससे वहां श्वांस लेना भी मुश्किल हो गया

है। कार्बनडाई ऑक्साइड गैस का ऐसा कुप्रभाव पड़ रहा है कि ओजोन छतरी में छिद्र हो गया है। सूर्य की पराबैंगनी किरणें यदि पृथ्वी पर डायरेक्ट आयेंगी तो अनेक बिमारियों के फैलने का भय व्याप्त रहेगा। प्रदूषण इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि सभी तत्व प्रभावित हो गये हैं।

हमारे चारों ओर जो कुछ भी है वह सब पर्यावरण का सहायक तत्त्व है। जीवन का अस्तित्व प्राकृतिक तत्त्वों के संतुलन पर टिका है। जिस वातावरण से पृथ्वी घिरी है, उस वातावरण में प्रत्येक तत्त्व एक अनुपात में है। यदि इस अनुपात में एक सीमा से अधिक अन्तर पड़ जाये तो जीवन समाप्त भी हो सकता है। पर्यावरण के निर्माण में पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश वनस्पति, मानव तथा मानवेतर सभी प्राणियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिये केवल इतना समझना आवश्यक नहीं है कि प्रकृति हमारे लिये उपयोगी है। समझना यह है कि हम प्रकृति के एक अवयव हैं। जिस प्रकार हममें जीवन है उसी प्रकार प्रकृति के प्रत्येक कण–कण में जीवन है। मानव प्रकृति की उपेक्षा करके अपने अस्तित्त्व को नहीं बचा सकता। यदि उसे अपने अस्तित्त्व की रक्षा करना है तो जीवन के हर रूप को पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तक को सुरक्षित रखना होगा। इन पांचों तत्त्वों की सुरक्षा और संरक्षा मनुष्य पर निर्भर है। प्रकृति ने मानव को उपभोग के लिये एक अक्षय खजाना दिया है। यदि इसका सदुपयोग किया जाय तो यह समाप्त होने वाला नहीं है, किन्तु यदि इन तत्त्वों का दुरुपयोग किया जाएगा तो समाप्त भी हो जायेगा और मानव के अस्तित्त्व के लिये संकट भी उपस्थित हो जायेगा। इसलिये सुरक्षित पर्यावरण मानव के अस्तित्त्व के लिये आवश्यक है। गीता में पंचमहाभूतों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को भगवान् कृष्ण ने अपनी प्रकृति कहा है। ये तत्त्व मानव के लिए उतने ही पूजनीय हैं जितने की ईश्वर। इनकी पूजा करना ईश्वर की पूजा करना है। यही कारण है कि वृक्षों में देवत्व का आरोप करके हमारे देश में वृक्षों की पूजा की जाती है। उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण मनुष्य अपने पुराने आदर्शों और परम्पराओं को भूलकर प्राकृतिक तत्त्वों का अन्धाधुन्ध दोहन कर रहा है। आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का उपयोग मानव के अनैतिक आचरण का परिणाम है। हम किसी भी तरह से पर्यावरण के घटकों के पदार्थों से छेड़खानी करते हैं तो उसके दुष्परिणाम भुगतने को तैयार रहना पड़ेगा। चाहे एक इन्द्रिय जीव हो या द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय जीव हो, यदि

इनमें से किसी एक का भी विनाश होता है तो हमारी खाद्य श्रृंखला विघटित हो जायेगी, जिससे हमारा इकोसिस्टम बिगड़ जायेगा। एक उदाहरण से समझते हैं, जैसे मृत पशुओं को गिद्ध, चील आदि खाते हैं, जिससे हमारा पर्यावरण प्रदूषित नहीं होता। वर्तमान समय में देखते हैं कि गिद्ध, चील आदि नहीं दिखाई देते तब मृत पशुओं का क्या किया जाये? और इन मृत पशुओं से विभिन्न प्रकार के रोगादि फैल रहे हैं, वातावरण प्रदूषित हो रहा है। इसीलिए वातावरण को स्वच्छ रखना है तो हमें प्रत्येक प्रकार के जीवों की रक्षा करनी होगी।